

रामनरेश त्रिपाठी की राष्ट्रीय चेतना और 'पथिक'

डॉ. सरिता, सहायक प्राध्यापक,

श्याम लाल कॉलेज (सांध्य), दिल्ली विश्वविद्यालय

हिन्दी कविता की राष्ट्रीय परम्परा में रामनरेश त्रिपाठी का अपना वैशिष्ट्य है। ये द्विवेदी और छायावाद युग के प्रतिष्ठित कवि थे। इनकी प्रमुख रचनाओं का स्वर उदात्त देश-प्रेम और बलिदान की भावना रहा है। समकालीन परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण कर उदात्त राष्ट्र-प्रेम और आदर्श जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा ही इनके साहित्यिक जीवन की धुरी था। उन्होंने तत्कालीन राष्ट्रीय आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया, वे कई बार जेल भी गये। देश के प्रति अगाध प्रेम ही 'पथिक' काव्य में मुखरित हुआ है। पथिक काव्य में राष्ट्रीय चेतना के प्रसार को मुख्य उद्देश्य मानने के साथ-साथ अनेक अन्य ऐसे भी पक्ष हैं जिन्हें हम मूल राष्ट्रीय चेतना का पथिक कह सकते हैं। उदात्त मानव प्रेम, आदर्श यथार्थ का समन्वय, अहिंसा, सर्वात्मवाद, कर्मयोग की प्रेरणा की अभिव्यक्ति इनके काव्य की मुख्य विशेषता रही है।

'पथिक' की मूल चेतना में 'कर्म' प्रधान है। देश की दुर्दशा से व्यथित होकर उस पर आंसू बहाने से राष्ट्र की उन्नति नहीं हो सकती बल्कि उसके लिए पुरुषार्थ और बलिदान की आवश्यकता है। 'पथिक' में यह भाव ही मुख्य रूप से दिखाई देता है। देश में व्याप्त अन्याय और अनीति को समाप्त कर सुव्यवस्था स्थापित करने के लिए जनता का उसके अधिकारों को प्रति सचेत किया है।

एक व्यक्ति 'निर्दयी' निरंकुश बन बैठा अधिकारी।

शासन है कर रहा तुम्ही पर लेकर शक्ति तुम्हारी।।

+ + +

पराधीन रह कर अपना सुख शोक न कह सकता है।

यह अपमान जगत में केवल पशु ही सह सकता है।।

+ + +

अपना शासन आप करो तुम, यह शांति है सुख है।

पराधीन से बढ़ जग में नहीं दूसरा दुख है।।

स्वाधीनता की यह चेतना ही सौन्दर्य का प्रारम्भ है। देश के प्रति पूर्ण समर्पण ही स्वतन्त्रता की पहली सीढ़ी है। पथिक की प्रेरणा रूपी वाणी से प्रभावित हो सभी राज कर्मचारी, सैनिक, निरंकुश शासक के विरुद्ध हो जाते हैं और उसे देश से निकालने में समर्थ होते हैं—

अकस्मात् हो उठी प्रेरणा, अदभुत सभी के मन में।

तजा उन्होंने एक साथ, दासत्व सर्वसम्मति से।।

+ + +

दिया निकाल देश सीमा से बाहर बड़े जतन से।

उस बबूल तरु को उखाड़ कर फेंका नन्दन वन से।।

भारतीय संस्कृति सदैव वैराग्य की अपेक्षा कर्म को महत्व देती रही है। आधुनिक युग में भी स्वामी विवेकानन्द, सुभाष, गांधी जैसे महान पुरुषों ने कर्म योग का मन्त्र दिया और उसे अपने जीवन में ढालने का प्रयास किया है।

‘पथिक’ काव्य में कर्म योग की यह प्रेरणा दिखाई देती है। जीवन के कर्तव्य मार्ग को छोड़कर कल्पना के संसार में विचरण करना वास्तव में पलायन है। अपने दायित्व बोध को पूरा करने के लिए कर्म के प्रति पूर्ण समर्पण का भाव ही मनुष्य का धर्म है। इसी तथ्य को त्रिपाठी जी ने अपने काव्य के माध्यम से प्रकट किया है। विश्व के सभी चर-अचर अपने अपने कर्म में लगे हैं तब मनुष्य क्यों कर्म से मुँह मोड़ कर भागे ? पलायनवादी प्रवृत्ति मनुष्य को कायर बनाती है। ईश्वर ने इस संसार की रचना कर्मक्षेत्र के रूप में की है। इस संसार रूपी कुरुक्षेत्र अर्थात् कर्मक्षेत्र में कर्तव्य का पालन करते रहना ही मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म और वीरता है। मृत्यु तक कर्म करते रहना ही मनुष्य जीवन की अभिलाषा होनी चाहिए—

कर्म तुम्हारा धर्म अटल हो, कर्म तुम्हारी भाषा।

हो सकर्म मृत्यु ही तुम्हारे जीवन की अभिलाषा।।

पथिक काव्य राजतन्त्र पर प्रजातन्त्र की विजय का काव्य है। इसकी कथा एक ऐसे लोकनायक का चरित्र प्रस्तुत करती है जो राजतन्त्र के षडयन्त्रों से देश को मुक्ति दिलाने के लिए अनवरत संघर्ष करता है। इसलिए पथिक का रचनाकाल भारत में अंग्रेजी शासन

के विरुद्ध संघर्ष का समय था। वह प्रजा को सचेत करता है कि उसी (प्रजा) की शक्ति ही राजा की शक्ति है। उसी के बल पर राजा शासन करता है। यदि इस शक्ति को उपयोग में लाने का अधिकार प्रजा को मिल जाये तो उसकी काया पलट सकती है। यही प्रजा का मूल सिद्धान्त है। ‘पथिक’ में यही सन्देश कवि ने दिया है—

नृप में बुद्धि नहीं, बस बल है, सो भी सकल तुम्हारा।

तुम हो अपने दुख दुर्गति का अपने आप सहारा।।

दुखदायी शासन से अपनी सारी शक्ति हटा लो।

निज सुख दुख का अपने ऊपर सारा भार सम्भालो।।

पथिक गांधीवादी दर्शन का आख्यान है। इसमें नायक के व्यक्तित्व तथा क्रियाकलापों में गांधी के सिद्धान्तों को देखा जा सकता है। वैयक्तिक प्रेम और प्रकृति प्रेम को देश-प्रेम में ढाल देने का संकल्प लेकर पथिक जब स्वदेश लौटता है तो निश्चय करता है कि पूरे देश में घूम कर जन सामान्य की परिस्थिति से परिचित हुआ जाए। पथिक काव्य का नायक भी गांधी जी की तरह कोट पतलून त्याग कर सात्विक जीवन व्यतीत करता है। गांधी के अहिंसक का गहरा प्रभाव काव्य में दिखाई देता है—

रक्तपात करना पशुता है, कायरता है मन की।

अरि को वश करना चरित्र से शोभा है सज्जन की।।

गांधी जी जातिगत भेदभाव और छुआछूत के विरोधी थे। वे दीन हीन लोगों को गले लगाना परम धर्म मानते थे। ‘पथिक’ काव्य का पथिक भी इसी को अपने जीवन का ध्येय मानता है—

घृणित अछूत, अकिंचन जग में जो जन है जितना ही।

तुमसे है प्रेम प्राप्ति का पात्र अधिक उतना ही।।

विकास की सुविधायें, उन्नति के समान अवसर सबको मिलने चाहियें। चाहे वे किसी जाति, वर्ग, लिंग अथवा प्रदेश का हो। सर्वोदय भावना की परिकल्पना का साकार रूप पथिक में दृष्टिगत होता है।

पथिक काव्य का आरम्भ आदर्शमय कल्पना लोक से होता है जो बाद में यथार्थ की ओर प्रवृत्त होता है। जीवन में कोरे आदर्श का कोई महत्व नहीं जब तक वह यथार्थ रूप में क्रियान्वित न हो-

यदि तुम अपनी अमित शक्ति को समझ काम में लाते।

अनुपम चमत्कार अपना तुम, देख परम सुख पाते।

यदि उद्दीप्त हृदय में सच्चे सुख की हो अभिलाषा।

वन में नहीं जगत में जाकर करो प्राप्ति की आशा।।

19वीं शताब्दी के आरम्भ में अनेक समाज सुधार और देशोत्थान के आन्दोलन चले। बहुत कम व्यक्ति निस्वार्थ भाव से सच्ची देश सेवा में प्रवृत्त होते थे। अधिकतर लोग अपने स्वार्थ और झूठी वाह वाही लेने के लिए ही राजनीति के क्षेत्र में आते थे। पण्डित रामनरेश त्रिपाठी स्वयं सार्वजनिक क्षेत्र में सक्रिय थे इसलिए उन्होंने ऐसे नेताओं को बहुत करीब से देखा और परखा था। उनके काव्य में ऐसे लोगों की वास्तविकता सामने आयी है-

त्रस्त भूप से, मान दान पाने की अभिलाषा से।

कई प्रजा के हैं हितेच्छु, निज उन्नति की आशा से।।

स्वतन्त्रता आन्दोलन की पृष्ठभूमिके रूप में लिखे गये इस काव्य में समकालीन परिस्थितियों का स्वाभाविक चित्रण हुआ है। साम्राज्यवादी शासन से दुखी जनता गरीबी और भूखमरी का सामना कर रही थी, शिक्षा का उद्देश्य केवल सरकारी तन्त्र को मजबूत बनाना और लाभ देना था। किसान अपनी उपज का लाभ नहीं उठा पाते थे। मजदूर वर्ग को पसीना बहा बहा कर भी पेट भर भोजन नहीं मिलता था। युवा वर्ग जीवन से निराश हो पलायनवादी बन रहा था। पराधीन जनता विदेशी साम्राज्य की क्रूरता का शिकार हो रही थी ऐसे समय में गांधीवादी विचारों से युक्त इस काव्य ने समाज को दिशा दी। अतः राष्ट्र चेतना एवं क्रान्ति के संवाहक के रूप में पथिक काव्य का अपना विशेष महत्व है। यह क्रान्ति एक वैचारिक क्रान्ति है जो कर्मयोग अपना कर सर्वहित कारक विचारों को गृहण करने की पक्षपाती है।